वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 292
ISBN 978-93-80353-12-8

सर्वसिद्धिकारक
कल्याण मंदिर विधान

– रचयित्री –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

पूज्य चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती माताजी के
72वें जन्मदिवस (मगसिर शु. सप्तमी) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.ए फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

चतुर्थ संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
2200 प्रतियाँ	मगसिर शु. सप्तमी, 9 दिसम्बर 2013	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण, सन् 2008-प्रतियाँ 1100, द्वितीय संस्करण, सन् 2009-प्रतियाँ 2200
तृतीय संस्करण, सन् 2011-प्रतियाँ 2200

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

परम पूज्य १०५ गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद

आर्यिका चंदनामती जी ने ब्रह्मचर्यव्रत लेने के बाद से ज्ञान, ध्यान और अध्ययन में अपने उपयोग को लगाया है। अपनी विद्या का सदुपयोग करते हुए नित्य प्रति नये-नये भजन, पूजन आदि रचनायें की हैं। मैंने जो भी कार्य करने के लिए कहा, उसे पूर्णसमर्पित होकर किया हैं। अंग्रेजी भाषा में भी भजन, पूजन लिखे हैं। भव्यात्माओं को धर्मोपदेश देकर एवं संघ में ब्रह्मचारिणी बहनों को अध्ययन कराकर ज्ञान को वृद्धिंगत किया है। इनमें जिनेन्द्र देव के प्रति, गुरु के प्रति विशेष भक्ति है। भक्ति एवं समर्पण भाव से नियम से ज्ञान की वृद्धि होती है।

आचार्य श्री कुन्दकुन्दस्वामी ने रयणसार में कहा है–

दाणं पूया मुक्खं, सावय धम्मे ण सावया तेण विणा।
झाणाज्झयणं मुक्खं, जइ-धम्मे तं विणा तहा सो वि।।

अर्थात् श्रावकधर्म में दान और पूजा ये दो मुख्य हैं क्योंकि इनके बिना गृहस्थजन श्रावक नहीं हो सकते हैं एवं मुनिधर्म में ध्यान और अध्ययन मुख्य हैं क्योंकि इनके बिना मुनि नहीं हो सकते हैं।

आर्यिका चंदनामती जी के लिए मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है कि आगे भी वे इसी तरह से अपनी ज्ञान प्रतिभा का सदुपयोग करते हुए नित्य नई-नई रचनाएँ करें। मेरी प्रेरणा से इन्होंने ''कल्याण मंदिर विधान'' की रचना बहुत सुन्दर की है। यह विधान इनके लिए कल्याणकारी हो एवं करने वाले भक्तों के लिए सुख-समृद्धिकारी होवे यह मेरा मंगल आशीर्वाद है। विधान के प्रभाव से देश में सुभिक्ष हो, शांति हो यह मंगल भावना है। इस विधान को करने वाले, पढ़ने वाले एवं सुनने वाले सभी महानुभाव अपने कार्य की सिद्धि करें यही मंगल आशीर्वाद है।

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

बीसवीं शताब्दी में मुनिपरम्परा को जीवन्त करने वाले युग प्रवर्तक चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज हुए है। उनके प्रथम पट्टशिष्य चारित्रचुड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से दीक्षित परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी हैं। वर्तमान में पूज्य माताजी जैन समाज की सर्वोच्च और सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी हैं। जिस समय पूज्य माताजी ने सन् 1956 में आर्यिका दीक्षा ग्रहण की उस समय पूरे भारत में लगभग 50-60 पिच्छीधारी साधु थे वर्तमान में देखते-देखते 1100 की संख्या पिच्छीधारी साधु-साध्वियों की हो गई हैं।

पूज्य ज्ञानमती माताजी ने 250 ग्रंथों की रचनाकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। उसी श्रृंखला में उनकी सुशिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने भी एक-दो नहीं पुस्तकें लिखी हैं। अनके ग्रंथों का हिन्दी पद्यानुवाद किया है। पूज्य माताजी की लेखनी में भी सरस्वती का वास है। जिस षट्खंडागम सूत्र ग्रंथ पर पूज्य ज्ञानमती माताजी ने संस्कृत भाषा में ''सिद्धांत चिन्तामणि'' टीका लिख कर सोलह पुस्तकें प्रदान की है, उस ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी कर रही हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'कल्याण मंदिर विधान' की रचना सरल भाषा में, सुन्दर छन्दों में करके भक्तों को भक्ति करने का सुन्दर अवसर पूज्य चंदनामती माताजी ने प्रदान किया है। इसके पूर्व भी इन्होंने भक्तामर विधान, नवगृह शांति विधान, 'मनोकामनासिद्धि विधान', 'तीर्थंकर जन्मभूमि विधान' आदि अनेक पूजा विधान लिखकर प्रदान किये हैं। माताजी के लिखे शब्द मोती की माला के समान हैं। बचपन से ही कवित्व प्रतिभा की धनी माताजी ने लगभग 500 भजन, चालीसा आदि काव्य कृतियों को रचा है।

यह विधान एक चमत्कारिक विधान है। इसको करके आप सभी प्रकार के सांसारिक सुखों को प्राप्त करते हुए आत्मिक सुख को भी प्राप्त करें, यही सभी भक्तों के लिए मंगल भावना है एवं जिनेन्द्र भगवान से पूज्य माताजी के दीर्घ और स्वस्थ जीवन की प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

सुरासुर-खगेन्द्रवंद्य-चरणाब्जयुग्मं प्रभुं।
महामहिम-मोहमल्ल-गजराज-कंठीरवं।।
महामहिम-रागभूमिरुह-मूलमुत्पाटनं।
स्तवीमि कमठोपसर्गजयि-पार्श्वनाथं जिनं।।

तार्किक चूड़ामणि श्रीकुमुदचंद्राचार्य अपरनाम श्रीसिद्धसेनदिवाकर विरचित कल्याणमंदिर स्तोत्र (श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र) पर जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जी की शिष्या परम पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से कल्याणमंदिर विधान लिख करके जैन समाज को एक नूतनकृति प्रदान की है। जिस प्रकार से आचार्य मानतुङ्ग का भक्तामर स्तोत्र धनञ्जय कवि का विषापहार स्तोत्र, वादिराज मुनिराज का एकीभाव स्तोत्र, श्रीभूपाल कवि का जिनचतुर्विंशतिका स्तोत्र चमत्कारिक है उसी प्रकार आचार्य श्री कुमुदचंद्र जी मुनिराज का कल्याणमंदिर स्तोत्र चमत्कारिक है। अतः इस प्रारंभिक चमत्कारिक स्तोत्र पर लिखा गया विधान भी अवश्य चमत्कारिक होगा।

इस विधान के प्रारंभ में मंगलाचरण में पूज्य माताजी ने लिखा है–

सिद्धशिला के अधिनायक प्रभु सिद्ध अनंतानंत नमूँ।
सिद्धिप्रिया को सुखदायक चौबीसों तीर्थंकर प्रणमूँ।।
रिद्धि सिद्धि के दाता चिन्तामणि पारस प्रभु को वंदन।
सुख समृद्धि के कर्ता विघ्नों के हर्ता जिनवर को नमन।।1।।

मंगलाचरण के 9 श्लोकों में पूरे विधान का सार भरा हुआ है। इस विधान में भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति है। भुक्ति, मुक्ति को देने वाला यह विधान अतिशयकारी है। 44 काव्यों में जिनवर के सभी गुणों का वर्णन है। कालसर्प का योग निवारण करने में भी यह विधान सक्षम है। ग्रंथों में कहा भी है कि जिनेन्द्रदेव की भक्ति से अकालमृत्यु का संकट टल जाता है। भगवान पार्श्वनाथ के जाप्य मंत्र से केतु ग्रह की बाधा दूर हो जाती है। इस विधान के करने से सांसारिक सुख भी मिल जाता है। अत्यंत सरल भाषा में विषय वस्तु को स्पष्ट करने वाला यह विधान है। सुंदर छंदों में लिखे गये विधान की पूजा की पंक्तियों

में पूज्य माताजी ने लिखा है–

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान.....भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।

पंचकल्याणक अर्घ्य में पूज्य माताजी ने भाव संजोए है कि पार्श्व प्रभु का ध्यान करके तुम भी पारस के समान बन जाओगे-

कर के पारस प्रभु का ध्यान, हम पारस बन जाएंगे।
हम पारस बन जाएंगे, मुक्ति श्री पा जाएंगे।।कर के....

संस्कृत के 44 श्लोकों का हिन्दी पद्यानुवाद अत्यंत सरलभाषा में करके पूज्य माताजी ने भक्तों को भक्ति रस में आप्लावित होने का सुन्दर अवसर प्रदान किया है। अर्घावली का एक नमूना देखिए–

सागर सम गंभीर गुणों से, अनुपम हैं जो तीर्थंकर।
सुरगुरु भी जिनकी महिमा को, कह न सके वे क्षेमंकर।।
महाप्रतापी कमठासुर का, मान किया प्रभु खण्डन है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।2।।

इस विधान के अंदर 3 वलय में 44 अर्घ्य निम्न प्रकार हैं–

प्रथम वलय में	**-8 अर्घ्य**
द्वितीय वलय में	**-16 अर्घ्य**
तृतीय वलय में	**-20 अर्घ्य**
	कुल=44 अर्घ्य

इस प्रकार इस विधान में 44 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य और 1 जयमाला है। इस विधान की पुस्तक में श्री देवेन्द्रकीर्ति आचार्य के द्वारा रचित संस्कृत का **''कल्याण मंदिर स्तोत्र पूजा विधान''** भी है। पुनः पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने कल्याण मंदिर व्रत विधिलिखी है जिससे इस व्रत को करने के इच्छुक महानुभाव व्रत करके महान पुण्य का संचय कर सकते हैं।

इस कल्याणमंदिर विधान को करके आप सभी सर्वसिद्धि को प्राप्त करें, यही मंगल भावना है। एवं जिनेन्द्रदेव से प्रार्थना है कि पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी इसी तरह से सरल साहित्य प्रदान करके समाज को लाभान्वित करें। स्वस्थ एवं दीर्घायु को प्राप्त करें।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र—**गोयल, **नाम—**कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर

जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम– प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम– ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि– 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई– चार (कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद)

बहन– आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

ब्रह्मचर्य व्रत– 25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंधदशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन– 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत– सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

आर्यिका दीक्षा– हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि– 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

पीएच.डी. की मानद उपाधि– तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को विश्वविद्यालय में।

साहित्यिक योगदान– चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति

विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान आदि 150 से अधिक पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' का हिन्दी पद्यानुवद, भगवान महावीर स्तोत्र की संस्कृत एवं हिन्दी टीका, भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष, जैन वर्शिप (अंग्रेजी में पूजा, भजन, बारहभावना आदि), भजन (लगभग 1000), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ एवं भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका। वर्तमान में 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ जैनिज्म डॉट कॉम' (ऑनलाईन जैन विश्वकोश) के सम्पादन में संलग्न।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जीतीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत "वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला" की स्थापना सन् 1972 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. **श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।**
2. **श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।**
3. **श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।**
4. **श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।**
5. **श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।**
6. **श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।**
7. **श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
8. **डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)**
9. **श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.**
10. **श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली**
11. **श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई**
12. **श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
13. **श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.**
14. **श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।**
15. **श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।**
16. **श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।**
17. **श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॅट प्लेस, नई दिल्ली।**

परम संरक्षक

1. **श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।**
2. **डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।**
3. **श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।**
4. **श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।**
5. **श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।**
6. **श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।**
7. **श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
8. **श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
9. **श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।**
10. **श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।**

11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।

संरक्षक

1. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन एवं स्व. श्रीमती आदर्श जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्लका, देहरादून (उ.प्र.)।

28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा जैन ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गलीचौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, राताना‌ड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैंविला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।

69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेन्द्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पंचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
106. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)
107. डॉ. विमला जैन ''विमल'' ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

कल्याणमंदिर विधान का मण्डल

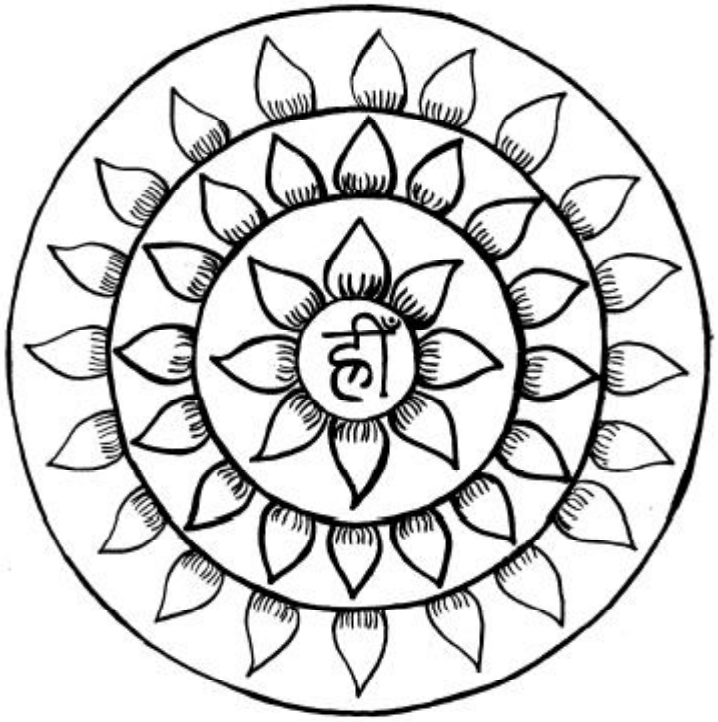

कल्याण मंदिर विधान

मंगलाचरण

–कुसुमलता छंद –

सिद्धशिला के अधिनायक, प्रभु सिद्ध अनंतानंत नमूँ।
सिद्धिप्रिया को सुखदायक, चौबीसों तीर्थंकर प्रणमूँ।।
रिद्धि सिद्धि के दाता चिन्तामणि पारस प्रभु को वंदन।
सुख समृद्धि के कर्ता विघ्नों, के हर्ता जिनवर को नमन।।1।।

पंचकल्याणक प्राप्त जिनेश्वर, निज आतम कल्याण करें।
सचमुच जो कल्याण के मंदिर बन जन-जन कल्याण करें।।
कुमुदचंद्र आचार्य प्रवर ने, इसीलिए शुभ भाव रखा।
पार्श्वनाथ प्रभु की भक्ती में, पार्श्वनाथ स्तोत्र रचा।।2।।

ऋद्धि मंत्रयुत इस स्तुति में, कार्यसिद्धि की शक्ती है।
लौकिक सुख की प्राप्ति हेतु भी, करो पार्श्वप्रभु भक्ती है।।
भुक्ति-मुक्ति को देने वाला, यह विधान अतिशयकारी।
पार्श्वनाथ स्तोत्र के ऊपर, ही इसकी रचना सारी।।3।।

चौवालिस काव्यों में प्रभु के, सभी गुणों का वर्णन है।
कालसर्प का योग निवारण, करने में यह सक्षम है।।
कालजयी व्यक्तित्व है जिनका, काल भी जिनसे हार गया।
काल भी यदि आया अकाल में, भक्ति से वह भी भाग गया।।4।।

जिनभक्ती से ही अकाल-मृत्यू का संकट टलता है।
पार्श्वनाथ के जाप्य मंत्र से, केतू ग्रह भी टलता है।।
जन्मलग्न के कालसर्प का, योग सभी नश जाता है।
इस विधान के करने से, सांसारिक सुख मिल जाता है।।5।।

मंडल पर प्रभु को पधराकर, विधिवत् पूजा पाठ करो।
मंगल कलश करो स्थापन, फिर भक्ती का ठाठ करो।।
पंचसूत्र से मंडल वेष्टित, कर आराधन विधि कर लो।
दिक्पालादिक का आह्वानन, कर मंडलशुद्धी कर लो।।6।।

जैसे पारस प्रभु ने संकट, सहकर शिवपद पाया है।
दश भव तक कमठासुर के प्रति, क्षमाभाव अपनाया है।।
वैसे ही मुझको भी कष्ट, सहन करने की शक्ति मिले।
जब तक मुक्ति मिले नहिं तब तक, भव-भव में प्रभु भक्ति मिले।।7।।

कुमुदचंद्र मुनिवर की कृति को, श्रद्धापुष्प समर्पित हैं।
उनके पद मोती की माला, उनके पद में अर्पित है।।
गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माताजी की संप्रेरणा मिली।
इस विधान की रचना हेतू, उनकी ही देशना मिली।।8।।

यही भावना करे चन्दनामती आर्यिका प्रभुपद में।
मेरा हो कल्याण जगत का, भी कल्याण करो क्षण में।।
सार्थक हो स्तोत्र नाम, कल्याण का मंदिर मुझ मन में।
परमातम की प्रतिमा सुन्दर, स्वयं विराजे इस तन में।।9।।

विधियज्ञ प्रतिज्ञापनाय कल्याणमंदिर विधान मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

कल्याणमंदिर विधान पूजा

स्थापना-शंभु छंद

हे प्रभुवर पारस नाथ! तुम्हीं, कल्याण के मंदिर कहलाते।
सब कार्यों की सिद्धी हेतु, सब भव्य तुम्हारे गुण गाते।।
श्री कुमुदचन्द्र आचार्य रचित, स्तोत्र पाठ का अर्चन है।
सबसे पहले निज हृदय महल में, आह्वानन स्थापन है।।1।।

दोहा

निज आतम का ध्यान कर, किया स्व पर कल्याण।
बने पंचकल्याणपति, पार्श्वनाथ भगवान।।2।।
हम भी निज कल्याण हित, करें स्तोत्र विधान।
पार्श्वनाथ को नमन कर, हम भी बनें महान।।3।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिर अधिनायक सर्वसिद्धिकारक! श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिर अधिनायक सर्वसिद्धिकारक! श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिर अधिनायक सर्वसिद्धिकारक! श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक

तर्ज-ऐ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी.....

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान.....भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।
प्रभु ने तो जन्म लिया, पर बने अजन्मा हैं।
निज कर्मों से ही वे, बन गये अकर्मा हैं।।
प्रभु की इस मनहर मूरत को, हम आज निरखने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।
भव भव में प्रभु हमने, कितना जल पी डाला।
पर शान्त न हो पाई, मेरे मन की ज्वाला।।

भव भव के ताप मिटाने को, जलधारा करने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान.....भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।
तुमने निज आतम का, क्रोधानल शान्त किया।
अज्ञान अमावस्या में, कैवल्य प्रकाश दिया।।
तेरा पावन आलोक प्रभो, हम मन में बसाने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।
मेरे चैतन्य सदन में, क्रोधाग्नी जलती है।
अज्ञान के अँचल में, छिप-छिप वह पलती है।।
हम इसीलिए चंदन लेकर, भवताप मिटाने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान...भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।
अधिपति तुम धवल भवन के, है धवल तेरा दर्शन।
क्षत भी विक्षत होते हैं, सौंदर्य तेरा लखकर।।
तेरी सुन्दर आतमनिधि का, अवलोकन करने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।
मेरा जीवन खंडित है, मद मोह व माया में।
अब करना अखंडित है, तव शीतल छाया में।।
अतएव अखण्डित पुँजों से, अक्षयपद पाने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये है।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।
चैतन्य वाटिका में तुम, ज्ञानांजलि भरते हो।
आत्मा की सुरभि में तुम, पुष्पांजलि करते हो।।
निष्काम तुम्हारे यौवन को, हम वंदन करने आए हैं।।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।
कितने उद्यानों में जा, पुष्पों की गंध लिया।
कभी घर को सजाया मैंने, कभी निज शृँगार किया।
अब तेरे पावन चरणों में, हम पुष्प चढ़ाने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान.....भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।
वेदनी कर्म पर प्रभु जी, तुमने आक्रमण किया।
भग गई क्षुधा तव तन की, आत्मा में रमण किया।।
परमौदारिक तन युक्त प्रभो की, कान्ति निरखने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।
हमने कितने भव-भव में, पकवान बहुत खाए।
लेकिन इस नश्वर तन की, नहिं भूख मिटा पाए।।
क्षुध रोग निवारण हेतु प्रभो! नैवेद्य थाल भर लाए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान....भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।

विज्ञान नगर में तुमने, निज ज्ञानालोक किया।
कैवल्य कला के द्वारा, जग को आलोक दिया।।
तेरी उस ज्ञान प्रभा को हम, शत वंदन करने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।
अज्ञान नगर में मेरा, चिरकाल से है रमना।
नृप मोह के बंधन में, नहिं पूर्ण हुआ सपना।।
अज्ञान अंधेर मिटाने को, हम दीप जलाकर लाए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान.....भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।
कर्मों की धूप जलाकर, सुरभित निज महल किया।
नोकर्मों को भी गलाकर, विकसित गुणमहल किया।।
तेरा गुणमहल निरखने को, हम द्वार तिहारे आये हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।
हमने कर्मों में निज को, आनन्दित माना है।
अतएव निजातम सुख को, किंचित् नहिं जाना है।।
कर्मों के ज्वालन हेतु प्रभो, हम धूप जलाने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान.....भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।
भव भव की पुण्य प्रकृतियाँ, तीर्थंकर फल लाईं।।
तेरी अर्चा के बहाने, तव शरण प्रभो आईं।।
तेरे वैभव अवलोकन को, हम समवसरण में आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।

मैं क्षणिक विनश्वर फल के, स्वादों में फँसा रहा।
जिव्हा की लोलुपता में, उत्तम फल को न लहा।।
तुम सम फल की प्राप्ती हेतू, फल थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान.....भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।
सब दोष रहित प्रभु पारस, जग पारस करते हो।
तुम निज में रम करके, ज्ञानामृत भरते हो।।
तेरा ज्ञानामृत चखने को, हम भक्ती करने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।
मैं अष्टद्रव्य लेकर के, तव सन्निध आया हूँ।
अष्टम वसुधा पाने को, मैं भी ललचाया हूँ।।
प्रभु सिद्धशिला की प्राप्ति हेतु, कुछ भक्त तेरे दर आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज-करती हूँ तुम्हारी भक्ति.....

जब तक गंगा यमुना में, जलधार बहेगी।
पारस प्रभुवर के ज्ञान गंग की, धार रहेगी।।
हे पार्श्व प्रभू जी, हे पार्श्वप्रभू जी ।।टेक.।।
कंचनझारी से चरणों में, त्रयधारा करनी है।
सांसारिक जन्म जरा मृत्यू की बाधा हरनी है।।
मेरे आतम मंदिर में सुख का, सार भरेगी।
पारस प्रभुवर के ज्ञानगंग की, धार बहेगी।।हे पार्श्व.।।1।।

शांतये शांतिधारा।

जब तक स्वर्गों में कल्पवृक्ष का, वास रहेगा।
पारसप्रभु के गुणपुष्पों का, इतिहास रहेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा.....
चंपा चमेली पुष्पों से, पुष्पांजलि करना है।
आध्यात्मिक गुण से अन्तर्मन को, सुरभित करना है।।
उस क्षमा पुष्प का जीवन में, संवास रहेगा।
पारस प्रभु के गुणपुष्पों का, इतिहास रहेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा।।2।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

तर्ज-आए महावीर भगवान, माता त्रिशला के आँगन में.....

कर के पारस प्रभू का ध्यान, हम पारस बन जाएंगे।
हम पारस बन जाएंगे, मुक्तिश्री पा जाएंगे।।कर के.....।।
वैशाख कृष्ण दुतिया को, माता के गर्भ पधारे।
माता वामा ने सोलह, सुपने देखे थे प्यारे।।
कर के भक्ति गर्भकल्याण, हम पारस बन जाएंगे।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पौष कृष्ण ग्यारस को, तीर्थंकर बालक जन्मे।
शचि गई प्रभू को लेने, माता के प्रसूति गृह में।।
पूजा करके जन्मकल्याण, हम पारस बन जाएंगे।।2।।कर के.....।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौषी कृष्णा एकम को, दीक्षाधारी जा वन में।
लौकान्तिक सुरगण आए, प्रभु की संस्तुति भी करने।।
जज के दीक्षा शुभकल्याण, हम पारस बन जाएंगे।।3।।कर के....।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चैत्र चतुर्थी के दिन, प्रभु केवलज्ञान हुआ था।
सबने प्रभु समवसरण में, दिव्यध्वनि पान किया था।।
भज लें प्रभु का केवलज्ञान, हम पारस बन जाएंगे।।4।। कर के....।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमि को, प्रभु का निर्वाण हुआ था।
सम्मेदशिखर पर्वत पर, इन्द्रों ने हवन किया था।।
पूजन करें मोक्षकल्याण, हम पारस बन जाएंगे।।5।।कर के.....।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा– **कुमुदचंद्र आचार्य ने, रचा स्तोत्र महान।**
मैं भी पूजन के निमित्त, करूँ पार्श्व गुणगान।।

अथ प्रथमवलये अष्टकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

–वसंततिलका छंद–

(1)

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्य - भेदि -
भीताभय - प्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम्।
संसारसागर - निमज्जदशेष-जन्तु-
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य।।1।।

–कुसुमलता छंद–

पारस प्रभु कल्याण के मंदिर, निज-पर पाप विनाशक हैं।
अति उदार हैं भयाकुलित, मानव के लिए अभयप्रद हैं।।
भवसमुद्र में पतितजनों के, लिए एक अवलम्बन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।1।।

ॐ ह्रीं भवसमुद्रतरणे पोतायमानकल्याणमंदिरस्वरूपाय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2)

यस्य स्वयं सुरगुरु र्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमति र्न विभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये।।2।।

सागर सम गंभीर गुणों से, अनुपम हैं जो तीर्थंकर।
सुरगुरु भी जिनकी महिमा को, कह न सके वे क्षेमंकर।।
महाप्रतापी कमठासुर का, मान किया प्रभु खण्डन है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।2।।

ॐ ह्रीं कमठस्य धूमकेतूपमाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3)

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः।।1।।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदिवा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः?।।3।।

दिवाअन्ध ज्यों कौशिक शिशु नहिं सूर्य का वर्णन कर सकता।
वैसे ही मुझ सम अज्ञानी, कैसे प्रभु गुण कह सकता।।
सूर्य बिम्ब सम जगमग-जगमग, जिनवर का मुखमंडल है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।3।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्याधीशाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4)

मोह-क्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो,
नूनं गुणान्गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मा-
न्मीयेत केन जलधे-र्ननु रत्नराशिः?।।4।।

प्रलय अनंतर स्वच्छ सिन्धु में, भी ज्यों रत्न न गिन सकते।
वैसे ही तव क्षीणमोह के, गुण अनंत नहिं गिन सकते।।

उनके क्षायिक गुण कहने में, पुद्गल शब्द न सक्षम हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।4।।
ॐ ह्रीं सर्वपीड़ानिवारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(5)

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्य-गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निजबाहु-युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः।।5।।

शिशु निज कर फैलाकर जैसे, बतलाता सागर का माप।
वैसे ही हम शक्तिहीन नर, कर लेते हैं व्यर्थ प्रलाप।।
सच तो प्रभु गुणरत्नखान अरु, अतिशायी सुन्दर तन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।5।।
ॐ ह्रीं सुखविधायकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6)

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश!
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेव-मसमीक्षित-कारितेयं,
जल्पन्ति वा निज-गिरा ननु पक्षिणोऽपि।।6।।

बड़े-बड़े योगी भी जिनके, गुणवर्णन में नहिं सक्षम।
तब अबोध बालक सम मैं, कैसे कर सकता भला कथन।।
फिर भी पक्षीसम वाणी से, करूँ पुण्य का अर्जन मैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।6।।
ॐ ह्रीं अव्यक्तगुणाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7)

आस्तामचिन्त्य-महिमा जिन! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्राऽऽतपोपहत-पान्थ-जनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्म-सरसः स-रसोऽनिलोऽपि।।7।।

जलाशयों की जलकणयुत, वायू भी जैसे सुखकारी।
ग्रीष्मवायु से थके पथिक के, लिए वही है श्रमहारी।।
वैसे ही प्रभुनाम मंत्र भी, मात्र हमारा संबल है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।7।।
ॐ ह्रीं भवाटवीनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8)

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धा।
सद्यो भुजङ्गम-मया इव मध्य-भाग-
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य।।8।।

जो नर मनमंदिर में अपने, प्रभु का वास कराते हैं।
उनके कर्मों के दृढ़तर, बंधन ढीले पड़ जाते हैं।।
चंदन तरु लिपटे भुजंग के, लिए मयूर वचन सम हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।8।।
ॐ ह्रीं कर्माहिबन्धमोचनाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वितीयवलये षोडशकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(1)

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाऽऽशु पशवः प्रपलायमानैः।।9।।

ग्वाले के दिखते ही जैसे, चोर पशूधन तज जाते।
वैसे ही तव मुद्रा लखकर, पाप शीघ्र ही भग जाते।।
कैसा हो संकट समक्ष प्रभु, ही हरने में सक्षम हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।9।।
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवहरणाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2)

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः।।10।।

भवपयोधितारक हे जिनवर! तुम्हें हृदय में धारण कर।
तिर सकते हैं जैसे पवन, सहित तिरती है चर्ममसक।।
इसीलिए भवसागर तिरने, में कारण प्रभु चिन्तन है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।10।।

ॐ ह्रीं भवोदधितारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3)

यस्मिन्हर-प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः,
सोऽपि त्वया रति-पतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन?।।11।।

हे अनङ्गविजयिन्! हरिहर, आदिक भी जिससे हार गये।
कामदेव के वे प्रहार भी, तुम सम्मुख आ हार गये।।
दावानल शांती में जल सम, प्रभु इन्द्रियजित् सक्षम हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।11।।

ॐ ह्रीं हुतभुग्भयनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4)

स्वा[1]मिन्नल्प-गरिमाणमपि प्रपन्ना-
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः।।12।।

है त्रैलोक्यतिलक! जिसकी, तुलना न किसी से हो सकती।
उन अनंत गुणभार को मन में, धर जनता कैसे तिरती।।

1. स्वाभिन्नतुल्यगरिमाणमपि इत्यपि पाठः।

किन्तु यही आश्चर्य हुआ, तिरते जिनवर भाक्तिकजन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।12।।

ॐ ह्रीं हृदयधार्यमाणभव्यगणतारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

(5)

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा [1]वद कथं किल कर्म-चौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नील-द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी।।13।।

प्रभो! क्रोध को प्रथम जीतकर, कर्मचोर कैसे जीता।
प्रश्न उठा मन में बस केवल, इसीलिए तुमसे पूछा।।
उत्तर आया हिम तुषार ज्यों, जला सके वन-उपवन है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।13।।

ॐ ह्रीं कर्मचौरविध्वंसकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6)

त्वां योगिनो जिन! सदा परमात्मरूप,
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज-कोष-देशे।
पूतस्य निर्मल-रुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य सम्भव-पदं ननु कर्णिकायाः।।14।।

हे जिनवर! योगीजन तुमको, हृदयकोष के मध्य रखें।
वैसे ही ज्यों कमल कर्णिका, कमलबीज को संग रखे।।
शुद्धात्मा के अन्वेषण में, हृदय कमल ही माध्यम है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।14।।

ॐ ह्रीं हृदयाम्बुजान्वेषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7)

ध्यानाज्जिनेश! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति।

1. वत-इत्यपि पाठः।

तीव्रानलादुपल-भावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातु-भेदाः।।15।।

हे जिनेश! तव ध्यानमात्र से, परमातम पद पाते जीव।
अग्निनिमित पा करके जैसे, सोना बनता शुद्ध सदैव।।
ऐसी शक्ती देने में निज, ज्ञानपुञ्ज ही सक्षम है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।15।।

ॐ ह्रीं जन्ममरणरोगहराय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8)

अन्तः सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः।।16।।

जिस काया के मध्य भव्यजन, सदा आपका ध्यान करें।
उस काया का ही विनाश, क्यों करते हो भगवान्! अरे।।
अथवा उचित यही जो विग्रह-तन तजते बन भगवन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।16।।

ॐ ह्रीं विग्रहनिवारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(9)

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद-बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष-विकारमपाकरोति।।17।।

हे जिनेन्द्र! मंत्रादिक से, जैसे जल अमृत बन जाता।
विषविकार हरने में सक्षम, वह परमौषधि कहलाता।।
इसी तरह तुमको ध्याकर, तुम सम बनते योगीजन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।17।।

ॐ ह्रीं आत्मस्वरूपध्येयाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(10)

त्वामेव वीत-तमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो! हरि-हरादि-धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभिरीश! सितोऽपि शङ्खो,
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण?।।18।।

जैसे कामलरोगी को, दिखती पीली वस्तू सब हैं।
वैसे ही अज्ञानी को, प्रभुवर दिखते हरिहर सम हैं।।
हे त्रिभुवनपति! फिर भी वे, करते तेरी ही पूजन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।18।।

ॐ ह्रीं परवादिदेवस्वरूपध्येयाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(11)

धर्मोपदेश-समये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीव-लोकः।।19।।

हे प्रभु पुण्य गुणों के आकर! तव महिमा का क्या कहना।
तरु भी शोकरहित तुम ढिग हों, फिर मानव का क्या कहना।।
रवि प्रगटित होते ही जैसे, कमल आदि खिलते सब हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।19।।

ॐ ह्रीं अशोकप्रातिहार्योपशोभिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(12)

चित्रं विभो! कथमवाङ्मुख-वृन्तमेव,
विष्वक्पतत्यविरला सुर-पुष्प-वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!,
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि।।20।।

हे मुनीश! सुरपुष्पवृष्टि, जो तेरे ऊपर होती है।
उनकी डंठल नीचे अरु, ऊपर पंखुरियाँ होती हैं।।

यही सूचना है कि भव्य के, प्रभु ढिग खुलते बन्धन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।20।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्योपशोभिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(13)

स्थाने गभीर-हृदयोदधि-सम्भवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परम-सम्मद-सङ्ग-भाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्।।21।।

तव गंभीर हृदय उदधी से, समुत्पन्न जो दिव्यध्वनी।
अमृततुल्य समझकर भविजन, पीकर बनते अतुलगुणी।।
सबकी भव बाधा हरने में, जिनवर गुण ही साधन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वंदन है।।21।।

ॐ ह्रीं अजरामरदिव्यध्वनिप्रातिहार्योपशोभिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(14)

स्वामिन्सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर-चामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुङ्गवाय,
ते नूनमूर्ध्व-गतयः खलु शुद्ध-भावाः।।22।।

देवों द्वारा ढुरते चामर, जब नीचे-ऊपर जाते।
विनयभाव वे भव्यजनों को, मानो करना सिखलाते।।
प्रातिहार्य यह प्रगटित कर, बन गये नाथ अब भगवन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।22।।

ॐ ह्रीं चामरप्रातिहार्योपशोभिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

(15)

श्यामं गभीर-गिरमुज्ज्वल-हेम-रत्न
सिंहासनस्थमिह भव्य-शिखण्डिनस्त्वाम्।

आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-
श्चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्।।23।

स्वर्ण-रत्नमय सिंहासन पर, श्यामवर्ण प्रभु जब राजें।
स्वर्ण मेरु पर कृष्ण मेघ लख, मानों मोर स्वयं नाचें।।
इसी तरह जिनवर सम्मुख, आल्हादित होते भविजन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।23।।

ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्योपशोभिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(16)

उद्गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन,
लुप्त-च्छद-च्छविरशोक-तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि।।24।।

तव भामण्डल प्रभ से जब, तरुवर अशोक भी कान्तिविहीन।
हो जाता है तब बोलो क्यों?, भव्यराग नहिं होगा क्षीण।।
वीतरागता के इस अतिशय, से लाभान्वित भविजन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।24।।

ॐ ह्रीं भामण्डलप्रातिहार्यप्रभास्वते श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तृतीयवलये विंशतिकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(1)

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते।।25।।

हे प्रभु! देवदुन्दुभी बाजे, जब त्रिलोक में बजते हैं।
तब असंख्य देवों-मनुजों को, वे आमंत्रित करते हैं।।
तज प्रमाद शिवपुर यात्रा, करना चाहें तब भविजन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।25।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभिप्रातिहार्योपशोभिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2)

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता-कलाप-कलितोरु-सितातपत्र-
व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुवमभ्युपेतः।।26।।

तीन छत्र हे नाथ! चन्द्रमा, मानो स्वयं बना आकर।
निज अधिकार पुनः लेने को, सेवा में वह है तत्पर।।
छत्रों के मोती बन मानो, ग्रह भी करते वंदन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।26।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यविराजिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

(3)

स्वेन प्रपूरित-जगत्त्रय-पिण्डितेन,
कान्ति-प्रताप-यशसामिव संचयेन।
माणिक्य-हेम-रजत-प्रविनिर्मितेन,
[1]सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि।।27।।

समवसरण में माणिक-सोने-चांदी के त्रय कोट बने।
माना नाथ! तुम्हारी कांती-कीर्ती और प्रताप इन्हें।।
जन्मजात वैरी के भी, हो जाते मैत्रीयुत मन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।27।।

ॐ ह्रीं वप्रत्रयविराजिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4)

दिव्य-स्रजो जिन! नमत्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र[2],
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव।।28।।

प्रभु! इन्द्रों के नत मुकुटों की, पुष्पमालिका कहती हैं।
तव पद का सामीप्य प्राप्त कर, प्रगट हुई जो भक्ती है।।

1. शाल. इत्यपि पाठः। 2. वाऽपरत्र इत्यपि संभवति।

इसका अर्थ समझिये प्रभु से, जुड़े सभी अन्तर्मन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।28।।

ॐ ह्रीं पुष्पमालानिषेवितचरणाम्बुजाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(5)

त्वं नाथ! जन्मजलधेर्विपराङ् मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्[1]।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो! यदसि कर्म-विपाक-शून्यः।।29।।

हे कृपालु! जिस तरह अधोमुखि, पका घड़ा करता नदि पार।
कर्मपाक से रहित प्रभो! त्यों ही तुम करते भवि भवपार।।
इस उपकारमयी प्रकृति का, जिनमें अति आकर्षण है।।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।29।।

ॐ ह्रीं संसारसागरतारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6)

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक! दुर्गतस्त्वं,
किं वाऽक्षर-प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश!
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकास-हेतुः।।30।।

हे जगपालक! तुम त्रिलोकपति, हो फिर भी निर्धन दिखते।
अक्षरयुत हो लेखरहित, अज्ञानी हो ज्ञानी दिखते।।
शब्द विरोधी अलंकार हैं, प्रभु तो गुण के उपवन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।30।।

ॐ ह्रीं अद्भुतगुणविराजितरूपाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7)

प्राग्भार-सम्भृत-नभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।

1. पृष्ठिलग्नान् इत्यपि पाठः।

छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा।।31।।

हे जितशत्रु! कमठ वैरी ने, तुम पर बहु उपसर्ग किया।
किन्तु विफल हो कर्म रजों से, कमठ स्वयं ही जकड़ गया।।
कर न सका कुछ अहित चूँकि, ध्यानस्थ हुए जब भगवन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।31।।

ॐ ह्रीं रजोवृष्ट्यक्षोभ्याय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8)

यद्गर्जदूर्जित-घनौघमदभ्र-भीम
भ्रश्यत्तडिन्-मुसल-मांसल-घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर-वारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन! दुस्तर-वारिकृत्यम्।।32।।

हे बलशाली! तुम पर मूसल-धारा दैत्य ने बरसाई।
भीम भयंकर बिजली की, गर्जना उसी ने करवाई।।
खोटे कर्म बंधे उसके पर, जिनवर तो निश्चल तन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।32।।

ॐ ह्रीं कमठदैत्यमुक्तवारिधाराक्षोभ्याय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(9)

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्य-मुण्ड-
प्रालम्बभृद्भयदवक्त्र-विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भव-दुःख-हेतुः।।33।।

केशविकृत मृतमुंडमाल धर, कंठ रूप विकराल किया।
अग्नीज्वाला फेंक-फेंककर, विषधर सम मुख लाल किया।।
क्रूर दैत्यकृत इन कष्टों से, भी नहिं प्रभु विचलित मन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।33।।

ॐ ह्रीं कमठदैत्यप्रेषितभूतपिशाचाद्यक्षोभ्याय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(10)

धन्यास्त एव भुवनाधिप! ये त्रिसंध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य-कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्ष्मल-देह-देशाः,
पादद्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः।।34।।

हे प्रभु! अन्यकार्य तज जो जन, तव पद आराधन करते।
भक्ति भरित पुलकित मन से, त्रय संध्या में तुमको यजते।।
धन्य-धन्य वे ही इस जग में, धन्य तुम्हारा दर्शन है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।34।।

ॐ ह्रीं त्रिकालपूजनीयाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(11)

अस्मिन्नपार-भव-वारि-निधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मन्त्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति।।35।।

इस भव सागर में प्रभु! तेरा, पुण्यनाम नहिं सुन पाये।
इसीलिए संसार जलधि में, बहुत दुःख हमने पाये।।
जिनका नाम मंत्र जपने से, खुल जाते भवबंधन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।35।।

ॐ ह्रीं आपन्निवारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(12)

जन्मान्तरेऽपि तव पाद-युगं न देव!
मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्।।36।।

हे जिन! पूर्व भवों में शायद, चरणयुगल तव नहिं अर्चे।
तभी आज पर के निन्दायुत, वचनों से मन दुखित हुए।।

अब देकर आधार मुझे, कर दो मेरा मन पावन है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।36।।

ॐ ह्रीं सर्वपराभवहरणाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(13)

नूनं न मोह-तिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते।।37।।

मोहतिमिरयुत नैनों ने, प्रभु का अवलोकन नहीं किया।
इसीलिए क्षायिक सम्यग्दर्शन आत्मा में नहीं हुआ।।
जिनके दर्शन से भूतादिक, के कट जाते संकट हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।37।।

ॐ ह्रीं सर्वमनर्थमथनाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(14)

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः।।38।।

देखा सुना और पूजा भी, पर न प्रभो! तव ध्यान दिया।
भक्तिभाव से हृदय कमल में, नहिं उनको स्थान दिया।।
इसीलिए दुखपात्र बना, अब मिला भक्ति का साधन है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।38।।

ॐ ह्रीं सर्वदुःखहराय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(15)

त्वं नाथ! दुःखि-जन-वत्सल! हे शरण्य!
कारुण्य-पुण्य-वसते! वशिनां वरेण्य।
भक्त्या नते मयि महेश! दयां विधाय,
दुखांकुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि।।39।।

हे दयालु! शरणागत रक्षक, तुम दुःखितजनवत्सल हो।
पुण्यप्रभाकर इन्द्रियजेता, मुझ पर भी अब दया करो।।
जग के दुःखांकुर क्षय में, जिनकी भक्ती ही माध्यम है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।39।।

ॐ ह्रीं जगज्जीवदयालवे श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(16)

निःसंख्य-सार-शरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादित-रिपु-प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो,
बन्ध्योऽस्मि चेद् भुवन-पावन! हा हतोऽस्मि।।40।।

हे त्रिभुवन पावन जिनवर! अशरण के भी तुम शरण कहे।
कर न सकें यदि भक्ति तुम्हारी, समझो पुण्यहीन हम हैं।
जिनका पुण्य नाम जपने से, होता नष्ट विषम ज्वर है।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।40।।

ॐ ह्रीं सर्वशांतिकराय श्रीजिनचरणाम्बुजाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(17)

देवेन्द्रवन्द्य! विदिताखिल-वस्तु-सार!
संसार-तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!।
त्रायस्व देव! करुणा-ह्रद! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु-राशेः।।41।।

हे देवेन्द्रवंद्य! सब जग का, सार तुम्हीं ने समझ लिया।
हे भुवनाधिप नाथ! तुम्हीं ने, जग को सच्चा मार्ग दिया।।
जनमानस की रक्षा करते, दयासरोवर भगवन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।41।।

ॐ ह्रीं जगन्नायकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(18)

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्ततसञ्चितायाः।

तन्मे त्वदेक-शरणस्य शरण्य! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।42।।

नाथ! तुम्हारे चरणों की, स्तुति में यह अभिलाषा है।
भव-भव में तुम मेरे स्वामी, रहो यही आकांक्षा है।।
जिन पद के आराधन से, मिटते सब रोग विघन घन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।42।।

ॐ ह्रीं अशरणशरणाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(19)

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!
सान्द्रोल्लसत्पुलक-कञ्चुकिताङ्गभागाः।
त्वद्बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्ध-लक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः।।43।।

हे जिनेन्द्र! तव रूप एकटक, देख-देख नहिं मन भरता।
रोम-रोम पुलकित हो जाता, जो विधिवत् सुमिरन करता।।
दिव्य विभव को देने वाले, रहते सदा अकिंचन हैं।
ऐसे पारस प्रभु के पद में, अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन है।।43।।

ॐ ह्रीं चित्तसमाधिसुसेविताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(20)

(आर्याछंद)

जननयन 'कुमुदचन्द्र'! प्रभास्वराः स्वर्ग-सम्पदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मल-निचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।।44।।

जो जन नेत्र 'कुमुद' शशि की, किरणों का दिव्य प्रकाश भरें।
स्वर्गों के सुख भोग-भोग, कर्मों का शीघ्र विनाश करें।।
मोक्षधाम का द्वार खोलकर, सिद्धिप्रिया का वरण करें।
ऐसे पारस प्रभु को हम सब, अर्घ्य चढ़ाकर नमन करें।।44।।

दोहा – **इस स्तोत्र सुपाठ का, भाषामय अनुवाद ।**
किया ''चन्दनामति'' सुखद, ले ज्ञानामृत स्वाद।।

ॐ ह्रीं परमशांतिविधायकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य –

कुमुदचन्द्र आचार्य प्रवर ने, पार्श्वनाथ गुणगान किया।
इस कल्याण के मंदिर में, प्रभु भक्ती को स्थान दिया।।
सर्वसिद्धिकारी यह रचना, सबके लिए सुखास्पद है।
भाव सहित ''चन्दनामती'', पूर्णार्घ्य समर्पित प्रभु पद है।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिकरायकल्याणमंदिरस्तोत्र अधिपतिश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं क्रूरकमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय नमः**

अथवा

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्वनाथाय नमः।

जयमाला

तर्ज-तुमसे लागी लगन.....

जय जय पारस प्रभो, भवदधितारक विभो, द्वार आया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।टेक.।।
गर्भ से मास छह पूर्व नगरी।
रत्नमय वह बनारसपुरी थी।।
इन्द्रगण आ गए, चक्रधर पा गए, तेरी छाया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।1।।

जन्म होते ही कंपित मुकुट थे।
दिव्य बाजे स्वयं बज उठे थे।।
जग चकित हो गया, मोह तम खो गया, प्रभु की माया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।2।।

वामानन्दन हो पारस प्रभो तुम।
अश्वसेन के प्रिय लाल हो तुम।।
धर्मामृत जो बहा, ज्ञानामृत को लहा, जो भी आया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।3।।

प्रभु तुम पंचकल्याणक के स्वामी।
हो गये तीनों लोकों में नामी।।
मोक्ष में रम गए, सिद्धिपति बन गये, नहिं है काया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।4।।

श्री कुमुदचंद्र ने तुमको ध्याया।
एक स्तोत्र सुंदर बनाया।।
संकटमोचन बने, खुद करम सब हने, छोड़ी माया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।5।।

नाथ कल्याणमंदिर हो तुम ही।
जग का कल्याण करते हो प्रभु जी।।
विघ्नविजयी बने, मृत्युविजयी बने, सिद्धि पाया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।6।।

तेरी भक्ती का फल मैं ये चाहूँ।
भावना आत्म पद की ही भाऊँ।।
''चन्दनामति'' प्रभो, मांगते सब विभो, तेरी छाया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।7।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिर अधिनायक सर्वसिद्धिकारक श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

पार्श्वनाथ की भक्ति में, जो होते लवलीन।
ऋद्धि सिद्धि सुख पूर्ण कर, हों निज के आधीन।।8।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

प्रशस्ति

श्री वीरप्रभू निर्वाण वर्ष, पच्चिस सौ तेंतिस सुखकारी।
आश्विन शुक्ला[1] दशमी की तिथि है, जग में अति मंगलकारी।।
उस दिन विधान यह पूर्ण किया, निजगुरु की छत्रच्छाया में।
शुभ तीर्थ हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की शीतल छाया में।।1।।

बीसवीं सदी के प्रथम सूरि, आचार्य शांतिसागर जी थे।
उन प्रथम शिष्य अरु पट्टसूरि, आचार्य वीरसागर जी थे।।
उनकी शिष्या गणिनी माता, श्री ज्ञानमती जी कहलाईं।
इस युग की पहली बालब्रह्मचारिणी मात वे बन आईं।।2।।

इनकी शिष्या आर्यिका चन्दनामती नाम मैंने पाया।
गुरुचरणों की रज पाकर मेरी, सफल हुई नश्वर काया।।
इनके ही आशीषों से मैंने, इस विधान को रच डाला।
कल्याण का मंदिर इसे कहें, या सर्वसिद्धि करने वाला।।3।।

यूँ तो गणिनी श्री ज्ञानमती, माता ने कई विधान दिये।
ढाई सौ से भी अधिक ग्रंथ, लिखकर निज-पर उपकार किये।।
उनसे प्रेरित होकर मैंने भी, भक्ती के कुछ क्षण पाये।
भक्तामर अरु नवग्रहशांति के, लघु विधान तब रच पाये।।4।।

तीर्थंकर जन्मभूमि एवं, है मनोकामनासिद्धि पाठ।
षट्खण्डागम सिद्धान्त सुचिंतामणि टीका का अनुवाद।।
हे प्रभु! ऐसी ही ज्ञानसाधना, की मुझमें वृद्धी होवे।
बस यही ज्ञान हो पूर्ण ज्ञान, जिससे आतमसिद्धी होवे।।5।।

---

1. 21 अक्टूबर 2007।

कल्याण मंदिर विधान की मंगल आरती

-ब्र. कु. आस्था जैन (संघस्थ)

तर्ज-नागिन.....।

जय जय प्रभुवर, जय जय जिनवर की, मंगल दीप प्रजाल के
मैं आज उतारूँ आरतिया....
कुमुदचंद्र आचार्यप्रवर ने, इक स्तोत्र रच डाला।
पार्श्वनाथ की महिमा का है, चमत्कार दिखलाया।।प्रभू जी...।
प्रभु पार्श्वनाथ की, भक्ती में, मन मगन हुआ मुनिराज का,
मैं आज उतारूँ आरतिया....।।1।।

चौवालिस काव्यों में निर्मित, यह विधान अति सुन्दर,
रचा चंदनामती मात ने स्तोत्र पद्य रचनाकर।।प्रभू जी.....
प्रभु भक्ती से, निज शक्ति बढ़े, औ मिले मुक्ति का धाम रे
मैं आज उतारूँ आरतिया....।।2।।

काल सर्प का योग निवारण करने में है सक्षम।
जिनभक्ति से अपमृत्यु का दूर भी होता संकट।।प्रभू जी...
प्रभु पार्श्वनाथ, सर्वज्ञ हितंकर करें जगत कल्याण रे,
मैं आज उतारूँ आरतिया....।।3।।

पार्श्वप्रभू ने संकट सहकर, शिवपद को है पाया।
दशभव तक कमठासुर के प्रति, क्षमाभाव अपनाया।।प्रभू जी..
मुझको भी वैसी, शक्ति मिले, जब तक नहिं मुक्ती प्राप्त हो,
मैं आज उतारूँ आरतिया....।।4।।

गणिनी ज्ञानमती माता की, मिली प्रेरणा सबको।
पार्श्वनाथ का महामहोत्सव, आयोजन करने को।।प्रभू जी..
कर रही 'आस्था', यही कामना, मेरा भी कल्याण हो
मैं आज उतारूँ आरतिया....।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –दीदी तेरा देवर दीवाना.....

जिनवरों में जिनवर हैं प्यारे, पारसनाथ माता वामा के दुलारे।
तेइसवें तीर्थंकर हमारे, पारसनाथ माता वामा के दुलारे।।टेक.।।
जय जय हो, जय जय पारसनाथ जी।।

वाराणसी में जनम जब हुआ, अश्वसेन महल जगमगाने लगा था।
जिनवर रवी का उदय जब हुआ, तो मिथ्यात्व का अंधकार भगा था।।
सांवरिया के गूँजे जयकारे, पारसनाथ माता वामा के दुलारे।।1।।

है यह तृतीय सहस्राब्दि प्रभु की, महोत्सव सभी मिल के उनका मनाओ।
मिली प्रेरणा ज्ञानमति माताजी की, बनारस नगर को पुनः अब सजाओ।।
गाएँ गीत नर-नारी सारे, पारसनाथ माता वामा के दुलारे।।2।।

जीवन सभी का मंगलमयी हो, यही पार्श्वप्रभु से निवेदन है मेरा।
मिले ''चन्दनामति'' यह शक्ती सभी को, करें हम सदा नाथ उत्सव ही तेरा।।
घर-घर गूंजे तेरे जयकारे, पारसनाथ माता वामा के दुलारे।।3।।

श्री मद्देवेन्द्रकीर्तिप्रणीता

कल्याणमन्दिरस्तोत्रपूजा

(संस्कृत विधान)

पूर्व-पीठिका

श्रीमद्गीर्वाणसेव्यं प्रबलतरमहा-मोहमल्लातिमल्लं।
कान्तं कल्याणनाथं, कठिनशठमनो-जातमत्तेभसिंहम्।।
नत्वा श्रीपार्श्वदेवं, कुमुदविधुकृतो, रम्यकल्याणधाम्न।
स्तोत्रस्योच्चैर्विशालं, विधिवदनुपम, पूजनं कथ्यतेऽत्र।।

पंचवर्णेन चूर्णेन, कर्त्तव्यं कमलं वरं।
वेदवार्धिकरं वेद्यां, कर्णिकामध्यमं बुधैः।।

धौतवस्त्रधरः प्राज्ञः, श्लेष्मादिव्याधिवर्जितः।
बाह्याभ्यन्तर-संशुद्धो, जिनपूजा-विधानवित्।।

गुरोराज्ञां विधायोच्चं, शिरस्या-दरतस्ततः।
पृष्ट्वा सङ्घपतिं पूजा-प्रारंभः क्रियतेऽञ्जसा।।

आदौ गन्धकुटीपूजां, विधायामल-वस्तुभिः।
पञ्चानामर्हदादीनां, ततोऽर्यां परमेष्ठिनाम्।।

ततो गत्वा गुरोरग्रे, भारती-मुनि-पूजनं।
कृत्वेलाशुद्धिकार्यं च, क्रमेणागमकोविदैः।।

ततोऽम्लानां च सामग्रीं, कृत्वा सद्गीः बुधोत्तमः।
पूजनं पार्श्वनाथस्य, कुर्यान्मंत्र-पुरस्सरम्।।

एतत्पद्यसप्तकं पठित्वा स्वस्तिकस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीपार्श्वनाथस्तवन

(सोरठा छंद)

पारस प्रभु को नाऊँ, सार सुधासम जगत में।
मैं बाकी बलि जाऊँ, अजर अमर पद मूल यह।।

हरिगीता छंद (28 मात्रा)

राजत उतंग अशोक तरुवर, पवन-प्रेरित थर-हरै।
प्रभु निकट पाय प्रमोदनाटक, करत मानो मन हरै।।
तस फूल गुच्छन भ्रमर गुंजत, यही तान सुहावनी।
सो जयो पार्श्व जिनेन्द्र पातक, हरन जग चूड़ामनी।।
निज मरन देखि अनंग डरप्यो, सरन ढूंढ़त जग फिर्‌यो।
कोई न राखै चोर प्रभु को, आय पुनि पायन गिर्‌यो।।
यों हार, निज हथियार डारे, पुष्पवर्षा मिस भनी।
सो जयो पार्श्वजिनेन्द्र पातक, हरन जग चूड़ामनी।।
प्रभु अंग नील उत्तंगगिरि तैं, वानिशुचिसरिता ढली।
सो भेदि भ्रम गजदंत पर्वत, ज्ञान-सागर में रली।।
नय-सप्त-भंग-तरंग-मण्डित, पाप-ताप-विनाशिनी।
सो जयो पार्श्वजिनेन्द्र पातक, हरन जग-चूड़ामनी।।
चन्द्रार्चिचय-छवि-चारु चंचल, चमर-वृन्द सुहावने।
ढोलें निरन्तर यक्षनायक, कहत क्यों उपमा बने।।
यह नीलगिरि के शिखर मानो, मेघ झरि लागी घनी।
सो जयो पार्श्वजिनेन्द्र पातक, हरन जग-चूड़ामनी।।
हीरा जवाहर खचित बहुविध, हेम-आसन राजये।
तहँ जगतजनमनहरन प्रभुतन, नील वरन विराजये।।
यह जटिल वारिजमध्य मानौ, नीलमणिकणिका बनी।
सो जयो पार्श्वजिनेन्द्र पातक, हरन जग-चूड़ामनी।।

जगजीत मोह महान जोधा, जगत में पटहा दियो।
सो शुक्ल-ध्यान-कृपानबलजिन, विकट वैरी वश कियो।।
ये बजत विजय महानदुन्दुभि, जीत सूचै प्रभु तनी।
सो जयो पार्श्वजिनेन्द्र पातक, हरन जग-चूड़ामनी।।
छद्मस्थ पद में प्रथम दर्शन, ज्ञान चारित आदरे।
अब तीन तेई छत्रछल सों, करत छाया छवि भरे।।
अतिधवल रूप अनूप उन्नत, सोमबिम्ब-प्रभा हनी।
सो जयो पार्श्वजिनेन्द्र पातक, हरन जग-चूड़ामनी।।
द्युति देखि जाकी चन्द्र लाजे, तेज सौं रवि लाजई।
तव प्रभा-मण्डल जोग जग में, कौन उपमा छाजई।।
इत्यादि अतुल विभूतिमंडित, सोहये त्रिभुवन धनी।
सो जयो पार्श्वजिनेन्द्र पातक, हरन जग-चूड़ामनी।।
या अगम महिमा सिंधु चक्री, शक्र पार न पावहीं।
तजि हास भय तुम दास ''मथुरा'' भक्तिवश यश गावहीं।।
अब होहु भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहौं।
कर जोरि यह वरदान मांगौं, मोक्षपद जावत लहौं।।

स्थापना

प्राणतस्वः समायातं, फणिलाञ्छन-संयुतम्।
वामामातृसुतं पार्श्वं, यजेऽहं तद्गुणाप्तये।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न! श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! मम हृदये अवतर अवतर संवौषट्! इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न! श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न! श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! मम हृदयसमीपे सन्निहितो भव भव वषट्। इति सन्निधिकरणम्। परिपुष्पांजलिं क्षिपामः।

अष्टकम्

वियद्गङ्गासिन्धु-प्रमुखशुचितीर्थाम्बुनिवहैः।
शरच्चन्द्राभासैः, कनकमय-भृङ्गार-निहितैः।।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय जलम्।

स्फुरद्गन्धाहूत-प्रचुर-फणिसंरुद्ध-तरुजैः।
रसैः कर्पूरास्यैर्निर्विडभवसन्तापहरणैः।।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय चंदनम्।

अखण्डैः शालीयै-रपगत-तुषै-रक्षतमयैः।
प्रपुञ्जैरानन्द-प्रणयजनकैर्नेत्रमनसाम्।।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय अक्षतम्।

मरुद्दारुद्भूतै-र्विकचसरसी-जातबकुलैः।
लवङ्गैरामोद-भ्रमरमिलितैः पुष्पनिचयैः।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय पुष्पम्।

सदन्नैरापूर्ण-प्रवरघृतपक्वान्नसहितैः।
रसाढ्यैर्नैवेद्यै-रतुलकाञ्चनपात्रविधृतैः।।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय नैवेद्यम्।

हविर्जातैः रम्यै-र्विदलितदिशाकीर्णतमसैः।
प्रदीप्तैर्माणिक्यैर्विशदकलधौतार्चिरमलैः।।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय दीपम्।

सुकर्पूरोत्पन्नै-रमरतरु-सच्चन्दनभवैः।
सुधूपौघैः श्लाघ्यै-र्मिलदलिगणागुज्जितरवैः।।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय धूपम्।

सुपक्वैः नारङ्ग-क्रमुकशुचिकूष्माण्डकरकैः।
फलैर्मोचाम्राद्यैर्विबुधशिवसम्पद्वितरणैः।।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय फलम्।

जलैर्गन्धद्रव्यैर्विशदसदकैः पुष्पचरुकैः।
सुदीपैः सद्धूपैर्बहुफलयुतैरर्घ्यनिकरैः।।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

जयमाला

शताब्दजीवी समशत्रुमित्रो, हरित्प्रभाङ्गो हतमारदर्पः।
सपादचापद्वयतुङ्गकायो, यस्तं सदा पार्श्वजिनं नमामि।।
निराभूषशोभं, परिध्वस्तलोभं, चिदानन्दरूपं, नतानेकभूपं।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
शिवं सिद्धकार्यं, वरानन्ततुर्यं, रमानाथमीशं, जितानङ्गपाशम्।।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।

हरं विश्वनेत्रं, त्रिशुभ्रातपत्रं, क्षुधाबह्निनीरं, द्विधासङ्गदूरम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
दिशाचेलवन्तं, वरं मुक्तिकान्तं, निरस्तारिमोहं, पुरुं सौख्यगेहम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
जराजन्ममुक्तं, वरानन्दयुक्तं, हतक्रोधमानं, कृतज्ञानदानम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
अविद्यापहारं, सुविद्यागभीरं, स्वयंदीप्तिमूर्ति, जगत्प्राप्तकीर्तिम्।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं, त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
यतिवरवृषचन्द्रं, चित्कलापूर्णचन्द्रं।
विमलगुणसमृद्धं, नम्रनागामरेन्द्रम्।
जिनपतिमहिधारं, दुःखसन्तापहारं।
भजति नमति सारं, सौख्यसारं लभेत।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय जयमालार्घ्यम्।

सर्वजीवदयायुक्तः, सर्वलौकान्तिकार्चितः।
पार्श्वदेवः श्रियं दद्यात्, नित्यं पूजाविधायिनाम्।।

।। इत्याशीर्वादः।।

अष्टदलकमल पूजा

(मंडल पर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

कल्याण-मन्दिरमुदार-मवद्यभेदि-भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम्।
संसारसागर-निमज्ज-दशेषजन्तु-पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य।।1।।

सन्मङ्गलालयमुदासिकलङ्कहारि, संसारभीतमनसामभयप्रदायि।
जन्माब्धिमध्य असुमत्तरि यत्पदाब्जं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशार्घैः।।1।।

ॐ ह्रीं भवसमुद्रपतज्जन्तुतारणाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये।।2।।

वाचस्पतिर्न गुरुवारिनिधेः समर्थः,कर्तुं धिया स्तवमनन्तगुणस्य यस्य।
तीर्थाधिपस्य कमठोद्धतगर्वहर्तुः,तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशार्घैः।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-मस्मादृशाः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कोशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,रूपं प्ररूपयतिकिं किल घर्मरश्मेः।।3।

संक्षेपतोऽपि भुवि विस्तरितुं महत्त्वं, दक्षा भवन्ति न हि तुच्छधियो यदीयम्।
घूका जड़ा दिनकरस्य यथा स्वरूपं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।3।।

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो, नूनं गुणान्गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा-न्मीयेत केन जलधे र्ननु रत्नराशिः।।4।।

निर्मोह? कोऽपि मनुजो गुणसंहतेर्नो, संख्यां करोति गहनार्थपदस्य यस्य।
रत्नस्य वा प्रलयवायुहतस्य वार्धे-स्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।4।।

ॐ ह्रीं गहनगुणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि,कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः।।5।।

इच्छन्ति मन्दमतयः स्तवनं विधातुं, यस्य प्रकृष्टगुणिनः शिशवो यथात्र।
विस्तार्य बाहुयुगलं जलधेः प्रमाणं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।5।।

ॐ ह्रीं परमोऩतगुणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश! वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि।।6।।

गम्या गुणा यदि महद्भपुषां न यस्य, तत्रावकाश इह तुच्छधियां कथं स्यात्।
गायन्ति पत्रिण इवात्र जनास्तथापि, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।6।।

ॐ ह्रीं अगम्यगुणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन! संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि।।7।।

'स्तुत्या भवन्ति मनुजाः सुखिनोऽत्रकिं न, नाम्नैव यस्य मरुता नलिनाकरस्य।
सूर्यातपार्तपथिकाः शिशिरं यथा नु, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।7।।

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिलीभवन्ति, जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धा
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग-मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य।।8।।

यस्मिन्स्थिते हृदि विनाशमुपैति बन्धः,पापस्य शुद्धमनसो भविनो मयूरे।
संरुद्धचन्दननगोऽहिरिवात्र याते, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।8।।

ॐ ह्रीं कर्मबंधविनाशकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

षोडशदलकमलपूजा

(मंडल पर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र-रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः।।9।।

दृष्टे पलायनपराः किल भूतवर्गा, यस्मिन् विमुच्य मनुजानिह संग्रहीतान्।
दोषाचराः पशुपताविव गोसमाजं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।9।।

ॐ ह्रीं दुष्टोपवर्गविनाशकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः।।10।।

संसारिणां भवति यो हृदि संस्थितोऽपि, सन्तारकः किल निरन्तरचिन्तकानां।
भस्त्रागतो मरुदिवाम्बुनिधौ समर्थ-स्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।10।।

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

यस्मिन्हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन।।11

येनाहतं हरिहरादि-महत्त्वमुच्चैः, सोऽनन्तको जिनवरेण हतो हि येन।
वारांनिधेरिव जलं बडवानलेन, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।11।।

ॐ ह्रीं अनङ्गमथनाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन, चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः।।12।।

यं वाहका हृदि जनाः कथमुत्तरन्ति, संसारवारिधिमहो गुरुमप्यतुल्यम्।
चिन्त्यो न जातु महतां महिमात्र लोके, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।12।।

ॐ ह्रीं अतिशयगुरवे क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तस्तदा वद कथं किल कर्मचौराः,
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी।।13।।

जित्वा क्रुधं पुनरलं शठमोहदस्यु-र्येन प्रणाशितमुदारगुणेन चित्रं।
सौम्येन कर्दमजमत्र हि मेनवाश्रु, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।13।।
ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

त्वां योगिनो जिन! सदा परमात्मरूप-मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोषदेशे।
पूतस्य निर्मलरुचे र्यदि वा किमन्य-दक्षस्य सम्भवपदं ननु कर्णिकायाः।।14।।

यं साधवो हृदयतामरसे विकाशे, ध्यायन्ति शुद्धमनसो यत ईड्यमानम्।
चित्तादृतेन हि पदं वपुषीह पूतं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।14।।
ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

ध्यानाज्जिनेश! भवतो भविनः क्षणेन, देहंविहाय परमात्मदशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः।।15।।

यस्येह मानव उपैति पदं गरिष्ठं, सद्ध्यानतो झटिति संहननं विसृज्य।
हैमं यथानलवशाद्विदृषद्विशेषं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।15।।
ॐ ह्रीं कर्मकिट्टदहनाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

अन्तः सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं,भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः।।16।।

योऽन्तर्गतोऽपि भविनो वपुरत्र वेगा-न्निर्नाशयत्यखिलदुःखमयं विचित्रम्।
माध्यास्थिकः कलिमिवाशु महत्तरः स्वं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।16।।
ॐ ह्रीं देहदेहिकलहनिवारकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति।।17।।

विद्वद्भिरत्र यदभिज्ञधियायमात्मा, सञ्चिन्तितं फलति मुक्तिपदं हि सद्यः।
मान्यं श्रधेति सलिलं विषनाशकं वा, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।17।।
ॐ ह्रीं संसारविषसुधोपमाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः।
किं काचकामलिभिरीश! सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते विविधवर्ण विपर्ययेण॥18।।

ये ध्वस्तमोहतिमिरं कुपथप्रलग्नाः, कृष्णादिबुद्धिमनुदारमुपाश्रयन्ति।
नेत्रामया इव यथार्थ-विवेकहीना, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।18।।
ॐ ह्रीं सर्वजनबंद्याय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोऽपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः॥19।।

सद्धर्मजल्पनविधौ वसुधारुहोऽपि, शोकातिरिक्त इह यम्य किमन्यवृत्तं।
भानूदये सति यथा किल वारिजातं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।19।।
ॐ ह्रीं अशोकवृक्षविराजमानाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

चित्रं विभो! कथमवाङ् मुखवृन्तमेव, विष्वक्पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि।।20।।

रेजे-सुरप्रसव-संततिवृष्टि-रुद्धा, स्वामोदवासितदिशावलया यदीया।
यत्पादमाश्रितजना भृशमूर्ध्वगाः स्युः-तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।20।।
ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिशोभिताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्।।21।।

गंभीरहृज्जलधिजातवचो हि यस्य, प्रीणाति चारु जनतामृतोपमं तत्।
निःस्वाद्य गच्छति जनः किल मोक्षधाम, तं पार्श्वनाथमन्घं प्रयजे कुशाद्यैः।।21।।
ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिविराजिताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

स्वामिन्सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः।।22।।

यस्य प्रकीर्णकयुगं वदतीव लोकान्, दुग्धाडिब्धफेनधवलं सुरवीज्यमानं।
वन्दारुरुग्रगतिरेव जिनं सदेति, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।22।।
ॐ ह्रीं सुरचामरविराजमानाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

श्यामं गभीरगिरमुज्वलहेमरत्न-सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम्।।23।।

सद्धेमरत्नमयकेशरि-विष्ठरस्थं, यं भव्यकेकिन अभीक्ष्य नटन्त्यजस्रं।
जाम्बूनदाचलशिखाघनमन्यमानाः, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।23।।
ॐ ह्रीं पीठत्रयनायकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव।
सानिध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग! नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि।।24॥

श्यामप्रभावलयतोऽतिविचित्रकान्तिः, रेजे ह्यशोकतरुरुच्चतमोऽपि यस्य।
संसर्गतो भवति रागयुतो न कोऽत्र, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।24।।
ॐ ह्रीं भामण्डलमण्डिताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

विंशतिदलकमल पूजा

(मंडल पर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

भो! भो! प्रमादमवधूय भजध्वमेन-मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते।।25।।
गीर्वाणदुन्दुभिरतीव वदत्यजस्रं, मेनं निषेवय जिनं प्रविहाय मोहम्।
यस्मै त्रिविष्टपजनाय नदन्नभीक्ष्णं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।25।।
ॐ ह्रीं देवदुन्दुभिनादाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ! तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ताकलापकलितोल्लसितातपत्र-व्याजात्त्रिधा धृततनु र्ध्रुवमभ्युपेतः।।26।।
येन प्रकाशित इहेत्य कृतत्रिरूपो, लोकत्रयोधवलछत्रमिषेण चन्द्रः।
सोडुग्रहः किमिव यस्य करोति सेवां, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।26।।
ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहिताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

स्वेन प्रपूरित जगत्त्रयपिण्डितेन, कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन।
माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि।।27।।
यः शोभते मणिसुवर्णसुरौप्यजेन, तेजः प्रभाव-शुचिकीर्तिसमुच्चयेन।
शालत्रयेण-दिवि चामरनिर्मितेन, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।27।।
ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

दिव्यस्रजो जिन! नमत्त्रिदशाधिपाना-मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवति यदि वापरत्र, त्वत्सङ्गमे सुमनसो नरमन्त एव।।28।।
माल्यं सुथक्तिभरनम्रसुराधिपानां, सन्त्यज्य चारुमुकुटं पदमाश्रितं हि।
यस्यानिशं सुमनसां महदेव सेव्यं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।28।।
ॐ ह्रीं भक्तजनानवनपतिराय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

त्वं नाथ! जन्मजलधे र्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान्।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो! यदसि कर्मविपाकशून्यः।।29।

यस्तारयत्यतनुरङ्गभृतो विचित्रं, संसारवार्धिविमुखोऽपि सुभक्तियुक्तान्।
यन्मृत्तिकामय इवात्र घटोऽम्बुराशौ, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।29।।
ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्नभयतारकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक! दुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश!
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतुः।।30।।
यः सर्वलोकजनताधिपति र्दरिद्रो, व्यक्ताक्षरोऽप्यलिपिरित्युदितो महद्भिः।
ज्ञानी किलाज्ञ इति विस्मयनीयमूर्तिः, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।30।।
ॐ ह्रीं विस्मयनीयमूर्तये क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषा-दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा।।31।।
या लोकमूर्द्धवितता हि खलेन कोपा-दुत्थापिता कमठपूर्वचरेण धूलिः।
आच्छादिता तनुरहो न तयापि यस्य, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।31।।
ॐ ह्रीं कमठोत्थापितधूल्युपद्रवजिताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

यद्गर्जदूर्जित-घनौघ-मदभ्रभीम, भ्रश्यत्तडिन्मुसल-मांसल-घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन! दुस्तरवारिकृत्यम्।।32।।
नीरं विमुक्तमसुरेण सवज्रपातं, वर्षाभवं घनतरं यदुपद्रवाय।
तस्यासुरस्य बत दुःखदमेव जातं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।32।।
ॐ ह्रीं कमठकृतजलधारोपसर्गनिवारकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृति-मर्त्यमुण्ड, प्रालम्बभृद्भयदवक्त्र विनर्यदग्निः,
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः।।33।।
पैशाचिको गण उपद्रव-भूरियुक्तो, दैत्येन यं प्रतिनियोजित उद्धतेन।।
तद्दैत्यकस्य पुनरुग्र-भयप्रदोऽभूत् तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।33।।
ॐ ह्रीं कमठकृतपैशाचिकोपद्रवजयनशीलाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

धन्यास्त एव भुवनाधिप! ये त्रिसन्ध्य- माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः।।34।।

पादारविन्दयुगलं प्रणमन्ति भक्त्या, यस्य प्रशान्तमनसः किल धर्मवन्तः।
सद्भक्तयः परिहृताखिल-गेह-कार्या-स्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।34।।
ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश! मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि।
आकर्णितेतु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति।।35।।
यन्नाम नैवश्रुतमत्र जनेन येन, स प्रायशो हि भववारिनिधौ निमग्नः।
श्रुत्वा गतः शिवपुरं बहवस्त्रिशुद्ध्या, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।35।।
ॐ ह्रीं पवित्रनामधेयाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीशः पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्।।36।।
यत्पादपङ्कजमलं न हि येन पूतं, संपूजितं जगति संसरणान्तरेऽपि।
दुःखाशिनां भवति सोऽग्रचरः सदैव, स्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।36।।
ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते।।37।।
मोहान्धकारपटलावृतचक्षुषा यो, नैवेक्षितो भुवि जवज्जवकूपगेन।
येनात्र तस्य मनुजत्वमलं निरर्थं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।37।।
ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं च चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव! दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः।।38।।
किं वा श्रुतोऽपि यदि येन सुपूजितोऽपि, किं वीक्षितोऽपि हृद्भक्तिभराद्धृतो न।
यस्तस्य नैव फलदः खलु हीनभक्ते-स्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।38।।
ॐ ह्रीं भक्तिहीनजनमाध्यस्थाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

त्वं नाथ! दुःखिजनवत्सल! हे शरण्य, कारुण्य-पुण्यवसते वशिनां वरेण्य?
भक्त्या नते मयि महेश? दयां विधाय, दुखाङ् कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि।।39।।
वात्सल्यवान् जननदुःख-कदर्थितेषु, यः प्रत्यहं नत-जनेषु दयासमुद्रः।
सद्भक्तिभावकलितेषु भृशं शरण्य-स्तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।39।।
ॐ ह्रीं भक्तजनवत्सलाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य-मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम्।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो, वन्ध्योऽस्मि तद्भुवनपावन हा हतोऽमि।।40।।
भूयिष्ठभाग्यसदनं मदनाग्निनीरं, यत्पादतामरसयुग्ममनल्पतेजः।
संपूज्य गच्छति जनः शिवतामनर्घ्यं, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।40।।
ॐ ह्रीं सौभाग्यदायकपदकमलयुगाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्

देवेन्द्रवन्द्य; विदिताखिलवस्तुसार-संसारतारक? विभो भुवनाधिनाथ?
त्रायस्व देव करुणाह्रद? मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः।।41।।
गीर्वाणनाथनुत-पादपयोजयुग्म-स्त्राता भवाम्बुनिधिमग्नशरीरभाजाम्।
यः सर्वलोक-परमार्थ-पदार्थवेदी, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।41।।
ॐ ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

यद्यस्ति नाथ; भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि सन्ततसञ्चितायाः।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य? भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।42।।
यत्पूर्वजन्मकृत-पुण्यवतां जनानां, संभाव्यते भवभवेऽपि हि यस्य सेवा।
उन्मार्गवासितवतां ननु पापभाजां, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।42।।
ॐ ह्रीं पुण्यबहुजनसेव्याय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र? सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्याः, ये संस्तवं तव विभो? रचयन्ति भव्याः।।43।।
यन्मूर्तिरम्यवदनाम्बुज-दत्त-नेत्रा, ये मानवा स्तुतिसुधारस-मापिबन्ति।
नूनं भवन्ति सततं मरणातिगास्ते, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।43।।
ॐ ह्रीं जन्ममृत्युनिवारकाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

(आर्या छंद)

जननयनकुमुदचन्द्र-प्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा।
ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।।44।।
ये लोकनेत्र-कुमुदेन्दुनिभं प्रतुष्टा, संपूजयन्ति यमनन्तचतुष्टयाद्यम्।
ते मोक्षमव्ययपदं ध्रुवमाप्नुवन्ति, तं पार्श्वनाथमनघं प्रयजे कुशाद्यैः।।44।।
ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयतिसेवितपादाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम

(शालिनी छंद)

काशीदेशे वाराणसी-पुरेशो, यो बालत्वे प्राप्तवैराग्यभावः।
देवेन्द्राद्यैः कीर्तितं तं जिनेन्द्र, पूर्णार्घ्येन प्रार्चये वार्मुखेन।।

ॐ ह्रीं सर्वगुणसम्पन्नाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्रीपार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यम्।

समुच्चय जयमाला

शतमखनुतपादं, शान्तकर्मारिचक्रं,
शमदमयमगेहं, शङ्करं सिद्धकार्यम्।
सरसिजदलनेत्रं, सर्वलोकान्तिकार्च्यं,
सकलगुणनिधानं, संस्तवे पार्श्वदेवम्।।

भवजलनिधि-पतितामुत्तरणं, देवमनन्तगुणं जनशरणं।
चिद्रूपं बहुगुणसमुदायं, उत्तमगुणगण-हतभवपाशं।।

रम्यारम्य-गुणस्तवनीयं, कर्मबंध-निर्बन्धमजेयं।
दुष्टोपद्रव नाशन-वीरं, सुध्येयं जितमन्मथशूरं।।

गरिमाक्रोधमहानल-कुशदं, हृदि मृग्यं महतामतिविशदं।
कर्मदाहतीव्राग्नि-मतुल्यं, गतपरमात्मत्मपदं गतशल्यं।।

संसृतिविषहरणामृत-कूपं, पदनतनाग-नरामर-भूपं।
तुङ्गशोक-महीरुह-सरितं, उद्गमवृष्टियुतं सुरमहितं।।

योजनमितदिव्यध्वनिननदं, सुरचामर-वीज्यं हतविपदं।
पीठत्रय-नायकमघमथनं, हरितविभावलय गुणसदनं।।

दानवारिदुन्दुभि-सद्ध्वानं, श्वेतातपवारण-गुणमानं।
मणिहेमार्जुन-शालत्रितयं, पदनतभक्त-जनावनसुदयं।।

पृष्ठलग्न-जनतारण-दक्षं, विस्मयनीयं हतमदकक्षं।
हतकमठोत्थापित-बहुधूलि, जितमुसलोपम-जलधारालिं।।

हतपैशाचिक विप्लवजालं, नतधर्मिष्ठजनं गुणमालं।
पूतनामधेयं शिवभाजं, वरपवित्रपादं जिनराजं।।

दर्शनीयमपहत घनपापं, भक्तिहीन-भविमध्यमरूपं।
भक्तिनम्रजन-वत्सलवन्तं, भूरिभाग्य-दायकमरिहन्तं।।

लोकालोक-पदार्थविवेद्यं, पदनतसुकृति-जनैरभिवन्द्यं।
जन्मजरा-मरणच्युतदेवं, 'कुमुदचन्द्र' यतिकृतपदसेवम्।।

(घत्ता)

विश्वादिसेनान्वयव्योमतिग्मं, सद्दव्यावारांनिधिधर्मचन्द्रं।
देवेन्द्रसत्कीर्तित-पादयुग्मं, श्रीपार्श्वनाथं प्रणमामिभक्त्या।।

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं क्रूरकमठोपद्रवजिनाय श्रीपार्श्वनाथाय जयमाला अर्घ्यं।

यः प्राग्विप्रइभोऽनुद्वादशदिवि, स्वर्गी ततः खेचरः।
पश्चादच्युतकल्पजो निधिपतिः ग्रैवेयके मध्यमे।।
इन्द्रोऽभूत्तत ईशतां शुभवचः, आनन्दनामानते।
ग्रीर्वाणस्तत उग्रवंशतिलकः, पार्श्वेट् स वो रक्षतात्।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

गुणे वेदाङ्गचन्द्राब्दे, शाके फाल्गुनमासके।
कारंजाख्यपुरे नूनं, पूजेयं सुविनिर्मिता।।

इति श्रीबलात्कार-गच्छीयभट्टारकेन श्री मद्देवेन्द्रकीर्तिना विरचिता।।

कल्याण मंदिर व्रत विधि

प्रस्तुति-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

कल्याण मंदिर स्तोत्र भगवान पार्श्वनाथ का स्तोत्र है। इसमें भी आदि में ''कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि'' है।

अतः स्तोत्र के प्रारंभ में 'कल्याण मंदिर' पद आ जाने से इसका कल्याणमंदिर स्तोत्र यह सार्थक नाम हो गया है। इसमें 44 काव्य हैं। अतः 44 व्रत किये जाते हैं। व्रत के दिन श्री पार्श्वनाथ का अभिषेक करके कल्याण मंदिर यंत्र का भी अभिषेक करें और कल्याण मंदिर की पूजा या श्री पार्श्वनाथ की पूजा करें।

इसकी समुच्चय जाप्य निम्न प्रकार है–

ॐ ह्रीं कमठोपसर्गजिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र - (एक-एक व्रत के दिन क्रम से 1-1 मंत्र की माला फेरें।)

1. ॐ ह्रीं भवसमुद्रतरणे पोतायमानकल्याणमंदिरस्वरूपाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
2. ॐ ह्रीं कमठस्य धूमकेतूपमाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
3. ॐ ह्रीं त्रैलोक्याधीशाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
4. ॐ ह्रीं सर्वपीड़ानिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
5. ॐ ह्रीं सुखविधायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अव्यक्तगुणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
7. ॐ ह्रीं भवाटवीनिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
8. ॐ ह्रीं कर्माहिबन्धमोचनाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
9. ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवहरणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
10. ॐ ह्रीं भवोदधितारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
11. ॐ ह्रीं हुतभुग्भयनिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
12. ॐ ह्रीं हृदयधार्यमाणभव्यगणतारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
13. ॐ ह्रीं कर्मचौरविध्वंसकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
14. ॐ ह्रीं हृदयाम्बुजान्वेषिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
15. ॐ ह्रीं जन्ममरणरोगहराय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

16. ॐ ह्रीं विग्रहनिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
17. ॐ ह्रीं आत्मस्वरूपध्येयाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
18. ॐ ह्रीं परवादिदेवस्वरूपध्येयाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
19. ॐ ह्रीं अशोकप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
20. ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
21. ॐ ह्रीं अजरामरदिव्यध्वनिप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
22. ॐ ह्रीं चामरप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
23. ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
24. ॐ ह्रीं भामण्डलप्रातिहार्यप्रभास्वते श्री पार्श्वनाथाय नमः।
25. ॐ ह्रीं दुन्दुभिप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
26. ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यविराजिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
27. ॐ ह्रीं वप्रत्रयविराजिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
28. ॐ ह्रीं पुष्पमालानिषेवितचरणाम्बुजाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
29. ॐ ह्रीं संसारसागरतारकाय पार्श्वनाथाय नमः।
30. ॐ ह्रीं अद्भुतगुणविराजितरूपाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
31. ॐ ह्रीं श्री रजोवृष्ट्यक्षोभ्याय पार्श्वनाथाय नमः।
32. ॐ ह्रीं कमठदैत्यमुक्तवारिधाराक्षोभ्याय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
33. ॐ ह्रीं कमठदैत्यप्रेषितभूतपिशाचाद्यक्षोभ्याय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
34. ॐ ह्रीं त्रिकालपूजनीयाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
35. ॐ ह्रीं आपन्निवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
36. ॐ ह्रीं सर्वपराभवहरणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
37. ॐ ह्रीं सर्वमनर्थमथनाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
38. ॐ ह्रीं सर्वदुःखहराय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
39. ॐ ह्रीं जगज्जीवदयालवे श्री पार्श्वनाथाय नमः।
40. ॐ ह्रीं सर्वशांतिकराय श्रीजिनचरणाम्बुजाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
41. ॐ ह्रीं जगन्नायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
42. ॐ ह्रीं अशरणशरणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
43. ॐ ह्रीं चित्त समाधि सुसेविताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
44. ॐ ह्रीं परमशांतिविधायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।